“The Role of Rashtriya Swayamsevak Sangh in Social HarmonyAnd Educational Development:A Study.”

सामाजिक समरसता एवं शैक्षिक विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका : एक अध्ययन।

पी–एच.डी. शोध–प्रारूप

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय,

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

शिक्षा विभाग

शोधकर्त्ता

विकास सैनी

ज्ञानभानुर्भासताम्

iase
deemed university

निर्देशक

डॉ. दिनेश कुमार, प्राचार्य

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई)

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर (राजस्थान)

सत्र 2016

शोध–प्रारूप

शोधकर्त्ता : विकास सैनी

संस्थान : उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर (चूरू) राजस्थान।

शोध विषय : **सामाजिक समरसता एवं शैक्षिक विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका : एक अध्ययन।''**

"The Role of Rashtriya Swayamsevak Sangh in Social HarmonyAnd Educational Development:A Study."

प्रस्तावना :–

समाज की संगठित व्यवस्था ही समाज की स्वाभाविक अवस्था है। संगठन का अभाव समाज की स्वाभाविक स्थिति के अभाव का घोतक है। बिखरे हुए लोगों के समूह को समाज नहीं कहते। मिट्टी के अनेक बिखरे कण पत्थर या ईंट नहीं कहलाते जब तक ये बिखरे हुए कण जुड़कर अभिन्नता को प्राप्त नहीं होते, वे ईंट नहीं बन सकते है। अतः सामूहिकता समाज की स्वाभाविक अवस्था है।

समाज की इस स्वाभाविक अवस्था को भंग कर रही समाज में व्याप्त अनेको बुराइयाँ जैसे – जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, नस्लवाद, आंतकवाद आदि ऐसी समस्याओं से समाज को मुक्त कराने एवं समाज में समरसता स्थापित करने के लिए समाज के बुद्धिजीवी विद्वानों के द्वारा निरन्तर प्रयास किये गये है।

श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (गुरूजी) ने सामाजिक समरसता पर व्याख्यान देते हुए कहा था कि समरसता के लिए आत्मग्लानी दूर करने के लिए आत्मबोध को जगाना पड़ेगा, स्वार्थ के स्थान पर निस्वार्थ भाव का निर्माण करना पड़ेगा। सभी भेदों को भूलाकर एकात्मकता का भाव जागृत कर एकरस, समरस समाज का निर्माण करना पड़ेगा।[1]

''सामाजिक समरसता इस्लाम का पैगाम'' शीर्षक पर मौलाना बहिदुदीनखान ने कहा कि समाज में जिस तरह साम्प्रदायिक विद्वेष बढ़ता जा रहा है उसे देखकर सामाजिक जीवन के एक अन्तर्निहित गुण के रूप में आज सामाजिक समरसता की आवश्यकता की जबरदस्त वकालत करता है।[2]

भारत की एकता और अखण्डता को प्रभावित करने वाली इन बुराईयों के विरूद्ध भारत के सन्तो, महात्माओं एवं धर्म-गुरूओं के एक बहुत बड़े वर्ग ने उद्घोष किया है और समाज को सचेत किया है कि सभी एक दुसरे के साथ समानता का व्यवहार करें। भगवान श्री कृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है – ''पंडिताः समादर्शिनः'' अर्थात विद्वान मनुष्य सभी को समदृष्टि से देखते है। श्री रामानुजाचार्य ने समस्त ग्रामवासियों के सामने सहानारायण मंत्र को भेदभाव रहित समस्त समाज के लिए उद्घोषित किया। कर्नाटक के मेलूकोट विष्णु मंदिर में उन्होने यह नियम बना दिया कि केवल तथाकथित अस्पृश्य जातियों के लोग ही भगवान के उत्सव विग्रहों को रथ में प्रतिस्ठापित करेंगे तथा उन्हे ही सर्व-प्रथम रथ को खींचने तथा श्योत्सव प्रारम्भ करने का अधिकार होगा।

सामाजिक समरसता के विकास, राष्ट्रीय-एकता, अखण्डता और सशक्त समाज निर्माण के उद्देश्य से ही परम पूजनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की

---

[1] www.golwalkargurji.org/thoughats.-66.
[2] www..islamhindi/socialharmony_is_islamik_insistance.

स्थापना की और समाज को एक राष्ट्र निर्माण की दिशा प्रदान की।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचाराधारा से प्रेरित संगठन जैसे :- राष्ट्र सेविका समिति, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, वनवासी कल्याण आश्रम, विद्या भारती, विश्व हिन्दु परिषद्, सेवा भारती, सामाजिक समरसता मंच, भारत विकास परिषद्, आदि सामाजिक समरसता की दिशा में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे है।

संघ के स्वयंसेवक किसी भी प्रकार का जातिगत ऊँच-नीच या छुआछूत का भेदभाव मानते नहीं हैं और परस्पर प्रेमपूर्ण बन्धुभाव रखते हैं, किन्तु सारे समाज में ऐसी समरसता अभी स्थापित नहीं हो पायी है। अतः राष्ट्रीय स्तर पर समरसता का एक अभियान चलाया गया।

श्री गुरु जी के प्रयत्नों से सभी भारतीय धर्म-ग्रन्थों के धर्माचार्य जब विश्व हिन्दू परिषद् का गठन करके एक मंच पर आने के लिए सहमत हो गये तो 1979 के धर्म सम्मेलन उडूपी के विश्व हिन्दू सम्मेलन में पूजनीय धर्माचार्यो के श्रीमुख से घोषणा करा दी गई कि हमारे धर्म में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है, सभी हिन्दू सहोदर भाई हैं और कोई भी हिन्दू पतित नहीं होता (हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दु पतितो भवेत्)। उसके पश्चात् दलित उपेक्षित बन्धुओं की बस्तियों में धर्माचार्यों के पधारने की व्यवस्था की गयी और सब जातियों के लोगों के सामूहिक भोजन के कार्यक्रम आयोजित किये गये। इससे लोगों के मन से छुआछूत से सम्बन्धित हिचक समाप्त करना सरल हो गया। अब तो संघ के सेवा विभाग और 'सेवा भारती' के माध्यम से पिछड़ी मलिन बस्तियों में रहने वाले बन्धुओं के उत्थान के अनेक कार्यक्रम स्वयंसेवकों ने हाथ में ले लिये हैं जिससे सम्पूर्ण समाज में समरसता स्थापित हो सके।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. संघ की उद्देश्यों एवं सरंचना का अध्ययन करना।
3. संघ शाखा के क्रियाकलाप, प्रशिक्षण एवं विस्तार का अध्ययन करना।
4. संघ शाखा द्वारा व्यक्ति से समाज निर्माण की विचारधारा का अध्ययन करना।
5. सामाजिक समरसता के विकास में संघ की भूमिका का अध्ययन करना।
6. सामाजिक समरसता के विकास में संघ के समविचारी संगठनों की भूमिका का अध्ययन करना।
7. शैक्षिक विकास में संघ की भूमिका का अध्ययन करना।
8. शैक्षिक विकास में संघ के समविचारी संगठनों की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन का महत्व :–

यह भलीप्रकार सर्वविदित है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सम्पूर्ण समाज को संगठित और एकात्म करने के लिए अनथक प्रयास कर रहा है। संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने संघ के स्वयंसेवको को जाति, वर्ग, क्षेत्र या भाषा के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव न करना और सभी के साथ अपने परिवार के समान व्यवहार करना सिखाया है।

सन् 1934 ई. में जब महात्मा गाँधी ने वर्धा के शीत शिविर को देखा तो उन्हें जानकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ सभी जातियों के लोग शिविर में भाग ले रहें हैं, जिसमें तथा कथित अस्पृश्य जातियों के लोग भी है। ये सभी लोग समानता एवं पारस्परिक सम्मान के साथ शिविर में एक साथ रह रहें है। तब

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्याकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा था ''आपके संगठन में अस्पृश्यता का अभाव देखकर मैं अत्यंत संतुष्ट हूँ।''[3]

ऐसा ही अनुभव डॉ. अम्बेडकर को भी हुआ था जब उन्होंने सन् 1939 ई. में पुणे में आयोजित संघ के प्रशिक्षण शिविर को देखा। उन्होंने उस समय कहा था ''यहाँ का सम्पूर्ण वातावरण अत्यन्त पवित्र और समरस है। यहाँ पर सभी लोग अपनी जातिगत पहचान को भूल गये हैं।'' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं और स्वयंसेवकों में पारस्परिक सम्मान और समानता का भाव है। यह भाव सम्पूर्ण राष्ट्र में व्याप्त होना चाहिए।

अतः यह आवश्यक है कि प्रत्येक बालक नैतिक तथा सामाजिक उतरदायित्व पूर्ण भावनाओं से कार्य करें जिससे उनके कार्यों का वृहत् समाज पर विपरीत एवं हानिकारक प्रभाव न पड़े। अतः इन बातों को हमारी शिक्षा योजना में सम्मिलित करना अत्यन्त आवश्यक है। समाज के सभी व्यक्ति मिलजुल कर रहें। आपसी वैमनस्य शत्रुता एवं द्वेष की भावन को भुलाकर आपसी प्रेम, भाईचारा तथा बन्धुत्व की भावना रहे। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से सभी व्यक्तियों को समाज में मिलजुलकर हर एक को समरसता स्थापित करनी है।

वर्तमान में राजनैतिक पृष्ठभूमि में पल रहे लोगों द्वारा समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्बन्ध में कुल्सित विचार एवं भ्रान्तियाँ फैलाई जा रही है। अपनी राजनैतिक रोटीयाँ सेकने के लिए संघ को दलित विरोधी एवं असहिष्णुता का परिचायक बता रहे हैं, ऐसी विषम परिस्थिति में आज यह आवश्यक हो गया है कि समाज के समक्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की

---

[3] के.सूर्य नारायण राव। सामाजिक समरसता। जयपुर। ज्ञान गंगा प्रकाशन। पृ.सं. 20, 21

स्थापना, उद्देश्यों एवं क्रियाकलापों को जनमानस के समक्ष सत्यनिष्ठा से रखा जाये, जिससे राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता अक्षुण्ण बनी रहे। जिससे आनी वाली पिढ़ी सामाजिक समरसता का अनुसारण कर सके। ऐसा शोधकर्ता का छोटा प्रयास है।

अध्ययन का औचित्य :–

हमारे समाज के सामाजिक ढाँचे में जातियों का निर्धारण कुछ निश्चित कार्यों के पूरा करने के लिए किया गया है ये जातियाँ इन कार्यों को एक–दूसरे पर आश्रित रहकर तथा परस्पर सहयोग के द्वारा सम्पूर्ण समाज के कल्याण और विकास के लिए सम्पन्न करती हैं। इस व्यवस्था में सभी जातियों को उनके कार्य और उतरदायित्व का निर्वहन करने के कारण समान महत्व दिया जाता था। वहाँ किसी के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था। दुर्भाग्य से कुछ समय पश्चात् एक विचित्र प्रकार का प्रदूषण विकसित हुआ, जिसके कारण हमारे अपने ही समाज के एक वर्ग को अस्पृश्य समझा जाने लगा।

यह अस्पृश्यता ही हिन्दू विचार के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा और हानिकारक सिद्ध हुई है। यह विचार हिन्दू दर्शन के व्यापक और सर्वमान्य विचारों के अनुरूप नहीं था। व्यवहार में यह अस्पृश्यता का रोग समाज में विद्यमान है। आज हमारे सामने इस दूषित प्रवृति को दूर करने की समस्या विकराल रूप में उपस्थित है।

वैयक्तिक दृष्टि से सामाजिकता वह प्रक्रिया है जो समाज में आन्तरिक रूप से उस समय तक चलती रहती है जब तक कि वे अपने वातावरण के साथ समायोजन करने में समर्थ नहीं हो जाते। इस दृष्टि से व्यक्ति उस समाज के नियमों, परम्पराओं और मूल्यों को अपना लेता है, जिसमें वह रहता है। सामाजीकरण की यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है।

वस्तुनिष्ठ दृष्टि से सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार – ''सामाजिक समरसता की भावना का विकास करने के लिए बालको में जीवन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण उत्पन्न करना, उन्हें स्वार्थो से उपर उठकर समाज, देश और मानवता के लिए त्याग करने की प्रेरणा देना और छात्रों में नैतिकता की भावना को विकास करते हुए उनके चरित्र को ऊँचा बनाना है।'' सामाजिक समरसता की भावना का विकास करने के लिए बालक के मानसिक गुणों को जागृत करना और उसे सत्यम शिवम् सुन्दरम की अनुभूति की और उन्मुख करना है।

संघ और इसके समविचारी संगठनों के द्वारा सामाजिक समरसता हेतु किये गये कार्यो के ऐसे अनेकों उदाहरण है परन्तु इसके बावजूद भी आज जब समाज के परिदृश्य को देखता हूँ तो चित्त रोने लगता है, समाज में फैलते इस वैमनस्य भाव को देखकर मन अशान्त हो जाता है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को कैसा समाज दे पायेंगे। समाज में सामाजिक समरसता हेतु इतने प्रकल्प चल रहे है, फिर भी पूर्ण परिणाम सामने क्यों नहीं आ रहे है। इसी समस्या का समाधान ढुंढने के लिए मैंने मेरे शोधकार्य हेतु राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ और समविचारी संगठनों के द्वारा सामाजिक समरसता के विकास में इनकी भुमिका को विस्तार से अध्ययन करने का निश्चय किया।

शोध विधि–प्रविधि :–

- विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि।
- विषय वस्तु विश्लेषण विधि।
- साक्षात्कार विधि।
- अवलोकन विधि।

पूर्व में किये गये शोध कार्यो का पुनरावलोकन :–

भारत में हुए शोध कार्य :–

चौहान वीणा (2007) ने – ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता व सामुदायिक विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।'' विषय पर एम.फिल स्तरीय शोधकार्य किया और निष्कष्र रूपमें पाया कि विभिन्न सामाजिक वर्गो की सामाजिक समरसता की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।[4]

शर्मा कविता (2008) ने – ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों में धर्मनिरपेक्षता, नैतिक मूल्य व सामाजिक समरसता का अध्ययन।'' विषय पर एम.फिल. स्तरीय शोधकार्य किया और निष्कर्षतः पाया कि सरकारी व केन्द्रिय विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक समरसता की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सरकारी व अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता, नैतिक मूल्य एवं सामाजिक समरसता समान रूप से पाई जाती है। अनुदानित व केन्द्रिय विद्यालयों में इन सभी गुणों को समान रूप से बताया गया है।[5]

---

[4] iaseuniversity,gvm,sardarshahar
[5] iaseuniversity,gvm,sardarshahar

मुखर्जी, प्रताप और लोपमुद्रा राय सरस्वती (2009) :- ने ''सामाजिक समरसता का प्रारूप एवं स्तर और इसका भारत के विकास के साथ सम्बन्ध एक महिला उपागम के परिप्रेक्ष्य में।'' शीर्षक पर प्रायोजनात्मक शोधकार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि यूरोपीयन साहित्य तो यह दर्शाता है कि उच्च स्तर की सामाजिक समरसता, आर्थिक, अच्छी सरकार, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ाने में सहायक है। भारत के वृहद् भौगोलिक क्षेत्र, विभिन्न जातियाँ, सांस्कृतिक विविधता और विशाल अर्थव्यवस्था आदि लोगों में सामाजिक समरसता की कमी करते हैं परन्तु यह तो अनुभाविक अध्ययन नहीं हुआ और इस शोध के तथ्यों में पाया कि सामाजिक समरसता और भारत के विकास में सह-सम्बन्ध है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे के दतों के आधार पर इन्होंने सामाजिक समरसता का महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में एक सूची का निर्माण किया। मुस्लिम, अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की जनसंख्या में कम सामाजिक समरसता पाई गई। परन्तु विकास के क्षेत्र में इन जन जातियों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और व्यय के क्षेत्र थे। बहुत से आन्दोलन सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए धन क्षेत्रों में चलाये गये थे। इन्होंने सुझाव में बताया कि भारत की नीति निर्माण में सामाजिक समरसता बहुत महत्वपूर्ण मानक है। इसलिए इसको विकास का आधार बनाया जाना चाहिए।[6]

चितरंजन, सांवत (2010) ने :- ''सामाजिक समरसता और नेतृत्व'' शीर्षक पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। इनके शोध का उद्देश्य एक अच्छे नेतृत्व में एक आदमी की तरह प्रेरक और समूहों का मार्गदर्शन ओर नेतृत्व कार्यक्रमों में सामाजिक समरसता लाता है, का अध्ययन करना था। इन्होंने बताया कि चीन में नेतृत्व अपने निर्णयों में विपक्षों का आमने-सामने

---

[6] Centre for the study of Regional development. New Delhi. school of social science, JNU.

रूचियों को दर्शानाद्व सामाजिक समरसता को बढ़ता है। वैसे तो नेतृत्व विपक्ष और दुश्मन का नाम होता है जिसका अर्थ है लड़ना और पराजित करना परन्तु मजबूत नेतृत्व सामाजिक व्यवस्था और स्थिरता के साथ साथ सम्भाव और विषमभाव को भी बढ़ाता है।[7]

पंवार, नम्रता (2010) में – ''घरेलू सामाजिक समरसता और राज्य शक्ति भारत और चीन का तुलनात्मक अध्ययन।'' शीर्षक पर प्रायोजनात्मक शोधकार्य किया। इन्होंने शोध में बताया कि भरत और चीन दोनों ही देश विश्व में आर्थिक रूप से तेजी से विकास कर रहे है। भारत और चीन दोनों देशों में तुलनात्मक रूप से जातीय अल्पसंख्यक जो राज्य सरकारों के विरूद्ध खड़े है। जबसे सरकार का नेतृत्व हुआ है समानता दोनों देशों की सरकारें घरेलु सामाजिक समरसता की व्यवस्था करने में न तो सफल और न ही असफल रही है। यह शोध भारत में कश्मीर और पूर्वोतर राज्यों और चीन में तिब्बत और जीमांण प्रान्त तक सीमित था।[8]

विदेशों में हुए शोध कार्य :–

डेनियल, हार्वलेगर (2003) ने – ''सामाजिक समरसता की स्थापना में धर्म की भुमिका'' शीर्षक पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि धर्म–निरपेक्षता यूरोपीयन समाज में एक महत्वपूर्ण आस्था है जो समाज की व्यवस्था बनाए रखने का प्रमुख कारक है। इसके अलावा ऐसा पाया गया कि यूरोपीयन सभ्यता के मूल्य निर्धारण में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।[9]

---

[7] WorldshipAnd management development. (2010). china ruraineAnd enigma, p.no. 1-22
[8] www.alleademic.com/mets/no.394083index.html.dated05.03.11
[9] www.publish.aps.org/journals/dated28.03.11

विलियम ईस्टर ली (2006) ने – ''सामाजिक समरसता, संस्थान और वृद्धि'' शीर्षक पर सेन्टर कोर ग्लोब डवलपमेन्ट संस्था के लिए शोधकार्य किया। इन्होंने शोध में सामाजिक समरसता को मापने के साक्ष्यों में आय की समानता और अन्तर्जातीय दृढ़ता संस्थागत समानता आदि मुख्य है। जिनमें आकस्मिक वृद्धि में परिवर्तन आता है।[10]

बेहरेंग कैनडाड (2008) ने – ''मीडीया और अल्पसंख्यको के अधिकार : राष्ट्रीय प्रान्तों में जातीय अल्पसंख्यकों को मानवाधिकार पर बल और सामाजिक समरसता के विकास में मीडिया की भूमिका'' शीर्षक पर लन्दन विश्वविद्यालय में शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस शोध का उद्देश्य राष्ट्रीय पहचान में मीडिया की भूमिका, जाति अल्पसंख्यकों पर मीडिया के अनुभवों का पद विश्लेषण करना, इन अल्पसंख्यकों पर मीडिया के पोर्टल आदि का अध्ययन करना था। इस शोध में मीडिया ने राष्ट्रीय पहचान की झूठी तस्वीर, पुस्तक के प्रथम प्रकाशन से ही और इन दिनों में राष्ट्रों की समलैंगिक तस्वीरों को बिखेर दिया। निष्पद लैंगिक तस्वीरें आदि जातीय अल्पसंख्यकों सामाजिक बदलाव तथा राष्ट्रीय पहचान में गतिशील समाज की एक डिग्री बताया है।[11]

जोई स्कोट (2009) ने – ''विकेन्द्रीकरण, स्थानीय विकास और सामाजिक समरसताः एक आलोचनात्मक पुनरावलोकन।'' शीर्षक पर सरकार एवं सामाजिक विकास संसाधन केन्द्र बर्निंघम विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और निष्कर्ष में पाया कि विकेन्द्रीकरण के तत्वों में सेवा वितरण, आर्थिक विकास और सामाजिक समरसता और वास्तविकता आदि आनुभाविक शोध है। सामाजिक समरसता पर विकेन्द्रीकरण का प्रभाव पड़ता है।[12]

---

[10] Buch, M.B. (1978-83). III Survey of Research in education. P.no. 800.
[11] www.essays.se/about/social+strukturerl.14.02.11
[12] International Development department, Univ. of Birningham 2009.pp – 1-22

डेविड राईन (2010) ने – ''मूद्रा वृद्धि, रोजगार और सामाजिक समरसता की चुनौतियां'' शीर्षक पर अन्तराष्ट्रीय मोनिट्री फण्ड (IMF) विश्व बैंक, अन्तराष्ट्रीय श्रम संगठन के संयुक्त गाइडलाईन में प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया। इन्होंने अपनी रिपोर्ट में बताया कि बहुत से देशों में सामाजिक लचीलापन और सामाजिक तनाव पर मंदी का प्रभाव है। सामाजिक समरसता और सामाजिक स्थिरता लगातार मंदी के दौर में कम होती जा रही है परन्तु देशों के नागरिकों को लगता है कि वितीय बाजार पर विश्वास उनका अभी भी बना हुआ है। बहुत से लोग मंदी से नाराज भी है और वे सही भी है।[13]

समीक्षा :–

उपर्युक्त पूर्व में देश–विदेश में हुए शोधकार्यों का पुनरावलोकन करने के पश्चात् शोधकर्ता ने पाया की समरसता को लेकर पूर्व में कुछ शोध कार्य हुए है जिनमें विशेषकर माध्यमिक स्तर के बालकों में विभिन्न चरों की उपस्थिति को देखा गया है या धर्म अथवा मीडिया की भूमिका को समरसता के संदर्भ में देखा गया है, परन्तु सामाजिक समरसता के विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका को लेकर अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है अतः शोधकर्ता ने सामाजिक समरसता एवं शैक्षिक विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका : एक अध्ययन को अपने शोध का प्रतिपाद्य विषय बनाना समीचीन एवं प्रासंगिक समझा।

---

[13] www.focus.org/socialissues/oct.15.2010

अध्यायीकरण :–

अध्याय प्रथम :– अध्ययन की पृष्ठभूमि।

1.1 प्रस्तावना

1.2 अध्ययन का महत्व

1.3 अध्ययन का औचित्य

1.4 शोध विधि–प्रविधि

1.5 **प्रयुक्त उपकरण :–**

1. सामाजिक समरसता हेतु साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया जायेगा।
2. शैक्षिक विकास हेतु साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया जायेगा।

1.6 **समस्या कथन :–**

''सामाजिक समरसता एवं शैक्षिक विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका : एक अध्ययन।''

"The Role of Rashtriya Swayamsevak Sangh in Social HarmonyAnd Educational Development : A Study."

1.7 **समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ :–

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (R.S.S.) एक हिन्दू संगठन है जिसके सिद्धान्त हिन्दुत्व में निहित और आधारित हैं। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अपेक्षा संघ या आर.एस.एस. के नाम से

अधिक प्रसिद्ध है। इसकी शुरूआत 1925 में विजयादशमी के दिन डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई थी।[14]

राष्ट्रीय स्वयंसवेक संघ नामकरण 17 अप्रेल 1926 की एक बैठक में हुआ। 19 दिसम्बर 1926 को डॉ. हेडगेवार सर्वसम्मति से संग प्रमुख चुने गये। निरन्तर बढ़ते संगठन कार्य को सुव्यवस्थित चलाने के लिए नवम्बर 1929 में वे सरसंघचालक बनाये गये और कार्यकर्ताओं ने निश्चय किया कि देश की समस्त शाखाएँ उन्हीं के मार्गदर्शन में चलेगी।

सामाजिक समरसता :–

समाज के वर्गों व धर्म सम्प्रदायों के लोागें का आपस में मिलजुल कर तथा प्रेमपूर्वक, भाईचारे की भावना के साथ रहना ही सामाजिक समरसता है।

सामाजिक समरसता को व्यापक अर्थ में समझना अतिआवश्यक है। मनुष्य जीवन का निर्माण एवं मनुष्य में चेतना एक ही होने के कारण प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के समान है।

यूनाइटेड नेशन सामाजिक विकास शोध संस्थान ने सामजिक नीति को मानव कल्याण में शामिल किया परन्तु सामाजिक समरसता में नहीं। सामाजिक समरसता, सामाजिक कल्याण, सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धों की मधुरता को ही नहीं दर्शाता बल्कि इसे सामाजिक समन्वय की संज्ञा भी दी जा सकती है।[15]

सामाजिक समरसता की भावना का विकास करने के लिए बालक के मानसिक गुणों को जागृत करना और उसे सत्यम्, शिवम् तथा सुन्दरम् की अनुभूमि की और उन्मुख करना है।

---

[14] https://en.wikipedia.org/wiki/Rashtriya_Swayamsevak_Sangh
[15] www.unrisd.org/dated : 24.03.2009

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार सामाजिक समरसता की भावना का विकास करने के लिए बालकों में जीवन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण उत्पन्न करना, उन्हें स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज, देश और मानवता के लिए त्याग करने की प्रेरणा देना और छात्रों में नैतिकता की भावना का विकास करते हुए उनके चरित्र को ऊँचा बनाना है।

ऑक्सफॉर्ड शब्दकोश के अनुसार ''सामाजिक समरसता व्यक्तियों की एक साथ रहने की एकता से हैं।''[16]

सामाजिक आयोग के अनुसार ''सामाजिक समरसता, समरूपता, मानसिक परिस्थिति, सक्रिय सम्बन्ध, निष्क्रिय सम्बन्ध, समावेश और समानता का प्रतिनिधित्व है।''[17]

शैक्षिक विकास :-

शैक्षिक विकास से तात्पर्य व्यक्ति के उस विकास से है जिससे व्यक्ति उन सम्पूर्ण क्षमताओं को प्राप्त कर सके जो उसे समाज में सामंजस्य स्थापित करने में मददगार साबित हो सके।

कालिदास के अनुसार 'सम्यगाराधिता विद्या प्रबोध विनयाविभ' विद्या के माध्यम से ज्ञान विज्ञान एवं नियम इत्यादि गुणों का विकास होता है। **स्वामी विवेकानन्द** 'हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है। मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है। बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा रह सकता है।' **श्री अरविन्द धोष** 'शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है। यह ज्ञान, चरित्र और संस्कृति का उत्कर्ष करती है।' **डॉ. राधाकृष्णन्** 'शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए इस कार्य को किए बिना शिक्षा अपूर्ण है।'[18]

---

[16] OxfordAdvanced Learner. Oxford university Press. New Delhi. pp-288
[17] www.wikipedia.org/social chohension dated : 11.02.2009
[18] त्रिपाठी, डॉ. शालिग्राम। (1992-93) शिक्षा सिद्धान्त। दिल्ली। वेंकटेश प्रकाशन। पृ.सं. 1

उपर्युक्त विद्वानों के द्वारा शिक्षा के सन्दर्भ में कहे गये कथनों से यह स्पष्ट होता है कि बालक में या व्यक्ति में ऐसे संस्कारों का पूर्णतः निर्माण होना जिनसे वह अपने समाज देश एवं अपनी संस्कृति का संवर्धन कर सके और व्यक्ति के इसी प्रकार के विकास को शैक्षिक विकास कहना तर्कसंगत एवं न्यायसंगत होगा।

1.8 परिसीमन :–

1. शोध कार्य को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सामाजिक समरसता एवं शैक्षिक विकास से सम्बन्धित भूमिका तक सिमित रखा गया है।
2. शोध हेतु जयपुर प्रान्त के सीकर विभाग एवं जोधपुर प्रान्त के बीकानेर विभाग का चयन किया गया है।
3. शोध को सीकर एवं बीकानेर विभाग की 50 संघ शाखाओं के प्रत्यक्ष अवलोकन तक सिमित रखा गया है।

अध्याय द्वितीय : **सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन।**
इसके अन्तर्गत पूर्व में देश एवं विदेश मे हुए समबन्धित साहित्यों का अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय तृतीय : **राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ : पृष्ठभूमि।**
इस अध्याय के अन्तर्गत संघ की पृष्ठभूमि का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय चतुर्थ : **संघ शाखा : संरचना एवं उद्देश्य।**
इस अध्याय के अन्तर्गत संघ की संरचना, संगठन तंत्र एवं संघ के उद्देश्यों का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय पंचम् : **संघ शाखा : क्रियाकलाप, प्रशिक्षण एवं विस्तार।**
इस अध्याय के अन्तर्गत संघ की शाखाओं में होने वाले क्रियाकलाप, इसके प्रशिक्षण

शिविर आदि का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय षष्ठ : **संघ शाखा : व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण।**

इस अध्याय के अन्तर्गत संघ की व्यक्ति से समाज निमार्ण करने की अवधारणा का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय सप्तम् : **संघ के समविचारी संगठन : सामाजिक समरसता।**

इस अध्याय के अन्तर्गत संघ के समविचारी संगठनों की सामाजिक समरसता के विकास में भूमिका का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय अष्ठम् : **सामाजिक समरसता में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका।**

इस अध्याय के अन्तर्गत संघ की सामाजिक समरसता के विकास में भूमिका का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय नवम् : **संघ के समविचारी संगठन : शैक्षिक विकास।**

इस अध्याय के अन्तर्गत संघ के समविचारी संगठनों की शैक्षिक विकास में भूमिका का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय दशम् : **शैक्षिक विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका।**

इस अध्याय के अन्तर्गत संघ की शैक्षिक विकास में भूमिका का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय एकादश : **निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक निहितार्थ एवं क्रियात्कम योजना।**

इस अध्याय के अन्तर्गत शोध के निष्कर्ष, भावी शोध हेतु सुझाव, शोध के शैक्षिक निहितार्थ एवं क्रियात्मक योजना प्रस्तुत की जायेगी।

–: संदर्भ–ग्रन्थ :–

1. Buch, M.B. (1978-83). III Survey of Research in education. P.no. 800.
2. WorldshipAnd management development. (2010). china ruraineAnd enigma, p.no. 1-22
3. Centre for the study of Regional development. New Delhi. school of social science, JNU.
4. OxfordAdvanced Learner. Oxford university Press. New Delhi. pp-288
5. www.golwalkargurji.org/thoughats.-66.
6. www. islamhindi/socialharmony.is_islamik_insistance.
7. www.alleademic.com/mets/no.394083index.html.dated05.03.11
8. www.questia.com/dated11.03.11
9. www.publish.aps.org/journals/dated28.03.11
10. www.egev.arg/dated28.03.10
11. https://hi.wikipedia.org/s/460
12. www.wikipedia.org/social chohension dated : 11.02.2009
13. www.unrisd.org/dated : 24.03.2009
14. www.focus.org/socialissues/oct.15.2010
15. www.essays.se/about/social+strukturerl.14.02.11
16. iaseuniversity,gvm,sardarshahar
17. International Development department, Univ. of Birningham 2009.pp – 1-22
18. दीनदयाल उपाध्याय। एकात्म मानववाद। जयपुर। ज्ञान गंगा प्रकाशन। पृ.सं.1
19. के.सूर्य नारायण राव। सामाजिक समरसता। जयपुर। ज्ञान गंगा प्रकाशन। पृ.सं. 20, 21

20. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जनवरी–जून 1991, पृ.सं. 69
21. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जनवरी–जून 2001, पृ.सं. 64
22. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। एक परिचय। (सन् 2013) सम्पर्क विभाग। जयपुर। कुमार एण्ड कम्पनी। पृ.सं. 37–42
23. त्रिपाठी, डॉ. शालिग्राम। (1992–93) शिक्षा सिद्धान्त। दिल्ली। वेंकटेश प्रकाशन। पृ.सं.–1
24. विद्या भारती प्रदीपिका : समरसता विशेषांक, जुलाई 2008
25. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका', जनवरी–जून (1997) अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका, सरस्वती कूंज, निरालानगर, लखनऊ–226020
26. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका', जूलाई–दिसम्बर (2000) अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका, सरस्वती कूंज, निरालानगर, लखनऊ–226020
27. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका', जनवरी–जून (2003) अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका, सरस्वती कूंज, निरालानगर, लखनऊ–226020
28. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका', वर्ष–23, अंक–2, जूलाई–दिसम्बर (2004) अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका, सरस्वती कूंज, निरालानगर, लखनऊ–226020
29. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका', जनवरी–जून (2005) , अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका, सरस्वती कूंज, निरालानगर, लखनऊ–226020
30. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका', जूलाई–दिसम्बर (2005) अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका, सरस्वती कूंज, निरालानगर, लखनऊ–226020
31. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका', जनवरी–जून (2008) अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका, सरस्वती कूंज, निरालानगर, लखनऊ–226020
32. 'राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान' सम्प्राप्तियों एवं सम्भावनाएं/2, शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर ।
33. 'लोकमान्य शिक्षक संयुक्तांक–1991' शिक्षा की संपत्रिका, राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड यूनिवर्सिटी) ।

शोध कार्य में लगने वाली अपेक्षित अवधि :–

क्र.सं.	अध्याय	–	अवधि
1	प्रथम् अध्याय	–	2 माह
2	द्वितीय अध्याय	–	2 माह
3	तृतीय अध्याय	–	2 माह
4	चतुर्थ अध्याय	–	2 माह
5	पंचम् अध्याय	–	2 माह
6	षष्ठ अध्याय	–	2 माह
7	सप्तम् अध्याय	–	2 माह
8	अष्ठम् अध्याय	–	2 माह
9	नवम् अध्याय	–	2 माह
10	दशम अध्याय	–	2 माह
11	एकदश अध्याय	–	2 माह
12	टंकण कार्य	–	2 माह
	कुल अवधि	–	**24 माह**

शोध कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएँ :–

संस्थान में शोधकार्य हेतु पुस्तकालय, मनोविज्ञान विभाग एवं इंटरनेट आदि की सुविधा उपलबध है।

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर — शोधकर्त्ता के हस्ताक्षर

(डॉ. दिनेश कुमार) — **(विकास सैनी)**